eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

भारत और अफ्रीकाः कूटनीतिक और आर्थिक संबंध

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 26 Dec 2025 Accepted & Reviewed: 28 Dec 2025, Published: 31 December 2025

Abstract

भारत और अफ्रीका के बीच के रिश्तों का इतिहास गहरा, विविधतापूर्ण और सामयिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। भारत की विदेश नीति में अफ्रीका का स्थान स्वतंत्रता आंदोलन के समय से ही विशेष रहा है। औपनिवेशिक युग से लेकर आज के बहुपक्षीय वैश्विक संदर्भ तक, दोनों के बीच राजनीतिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक संपर्कों ने समय–समय पर नई दिशा ली है। यह शोध पत्र इस ऐतिहासिक यात्रा की विवेचना करता है, जिसमें 1947 के बाद द्विपक्षीय संबंधों की स्थापना, आर्थिक साझेदारी, ऊर्जा और कृषि निवेश, अफ्रीकी देशों के साथ रक्षा एवं तकनीकी सहयोग, ब्रिक्स और इंडो–पैसिफिक रणनीति के संदर्भ शामिल हैं। शोध का उद्देश्य यह समझना है कि कैसे भारत और अफ्रीका के साझेदारी की संभावनाएँ आज की वैश्विक राजनीति में आकार ले रही हैं और भविष्य में इनका क्या महत्व होगा।

मुख्य शब्द– भारत–अफ्रीका संबंध; कूटनीति; आर्थिक सहयोग; निवेश; दक्षिण–दक्षिण सहयोग; अफ्रीका संघ; भारत विदेश नीति; ब्रिक्स; ऊर्जा सुरक्षा

Introduction

भारत और अफ्रीका के बीच संबंध केवल आधुनिक कूटनीति की देन नहीं हैं, बल्कि उनकी जड़ें ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और वैचारिक समानताओं में गहराई से समाहित हैं। औपनिवेशिक दमन, नस्लवाद और आर्थिक शोषण के विरुद्ध साझा संघर्ष ने दोनों क्षेत्रों को एक–दूसरे के निकट लाया। स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में भारत ने अफ्रीकी देशों के आत्मनिर्णय और संप्रभुता के समर्थन में नैतिक व कूटनीतिक भूमिका निभाई, जिसने आगे चलकर दीर्घकालिक मित्रता और सहयोग का आधार तैयार किया। स्वतंत्रता के पश्चात भारत की विदेश नीति में अफ्रीका को विशेष स्थान मिला। गुटनिरपेक्ष आंदोलन के माध्यम से दोनों ने शीतयुद्ध की ध्रुवीकृत राजनीति से दूरी बनाते हुए विकास, शांति और सहयोग पर आधारित वैकल्पिक वैश्विक दृष्टि प्रस्तुत की। समय के साथ यह संबंध द्विपक्षीय से बहुपक्षीय स्वरूप में विकसित हुआ, जहाँ संयुक्त राष्ट्र, African Union, BRICS, और G20 जैसे मंचों पर साझा हितों का समन्वय दिखाई देता है। 21वीं सदी में भारत अफ्रीका संबंधों का दायरा उल्लेखनीय रूप से विस्तृत हुआ है। व्यापार, निवेश, ऊर्जा सुरक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, डिजिटल प्रौद्योगिकी और रक्षा सहयोग जैसे क्षेत्रों में साझेदारी तेज़ी से बढ़ी है। अफ्रीका भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं और कच्चे माल का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, वहीं भारत अफ्रीकी देशों के लिए किफायती तकनीक, औषधि, आईटी सेवाएँ और मानव संसाधन विकास का भरोसेमंद साझेदार बनकर उभरा है। "दक्षिण–दक्षिण सहयोग" की भावना के अंतर्गत भारत की विकासात्मक सहायता, ऋण रेखाएँ, क्षमता निर्माण, प्रशिक्षण कार्यक्रम अफ्रीकी विकास प्राथमिकताओं के अनुरूप रही है। हालाँकि, यह साझेदारी चुनौतियों से मुक्त नहीं है। वैश्विक प्रतिस्पर्धा, विशेषकर अन्य उभरती शक्तियों की सक्रियता, कुछ क्षेत्रों में राजनीतिक अस्थिरता, अवसंरचनात्मक सीमाएँ और वित्तीय जोखिम, ये सभी भारत अफ्रीका सहयोग की गति

और प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं। इसके बावजूद, साझा मूल्यों, पारस्परिक सम्मान और दीर्घकालिक हितों के कारण दोनों के संबंधों में निरंतर प्रगति की पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य भारत और अफ्रीका के कूटनीतिक तथा आर्थिक संबंधों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करना है, जिसमें ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान प्रवृत्तियाँ, प्रमुख उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ और भविष्य की दिशाएँ शामिल हों, ताकि बदलते वैश्विक परिदृश्य में इस साझेदारी की रणनीतिक महत्ता को स्पष्ट किया जा सके।

यथार्थवाद अंतरराष्ट्रीय राजनीति को शक्ति–संघर्ष और राष्ट्रीय हितों की प्रतिस्पर्धा के रूप में देखता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार राज्य अपने अस्तित्व, सुरक्षा और शक्ति–संतुलन को सर्वोपरि रखते हैं। भारत और अफ्रीका के संबंधों में यथार्थवादी तत्व स्पष्ट दिखाई देते हैं, अफ्रीका तेल, प्राकृतिक गैस और खनिज संसाधनों से समृद्ध है। भारत की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं ने नाइजीरिया, अंगोला और मोज़ाम्बिक जैसे देशों के साथ सहयोग को रणनीतिक महत्व दिया। हिंद महासागर क्षेत्र में अफ्रीकी तट (विशेषकर पूर्वी अफ्रीका) भारत की समुद्री सुरक्षा और व्यापारिक मार्गों के लिए महत्वपूर्ण है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए भारत अफ्रीकी देशों के समर्थन को रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण मानता है। इस दृष्टि से भारत अफ्रीका संबंध राष्ट्रीय हितों और शक्ति संतुलन की राजनीति से प्रेरित हैं।

उदारवाद सहयोग, संस्थागत व्यवस्था और परस्पर निर्भरता को अंतरराष्ट्रीय संबंधों का आधार मानता है। यह सिद्धांत मानता है कि आर्थिक सहयोग और अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ संघर्ष को कम करती हैं। भारत और अफ्रीकी देश संयुक्त राष्ट्र, African Union, और BRICS जैसे मंचों पर सक्रिय सहयोग करते हैं। व्यापार और निवेश ने दोनों क्षेत्रों को आर्थिक रूप से जोड़ा है, जिससे स्थिरता और विकास की संभावनाएँ बढ़ी हैं। भारत की रियायती ऋण रेखाएँ, तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम, और क्षमता निर्माण योजनाएँ उदारवादी दृ ष्टिकोण को दर्शाती हैं। उदारवाद यह स्पष्ट करता है कि संस्थागत सहयोग और आर्थिक परस्पर निर्भरता ने भारतदृअफ्रीका संबंधों को सुदृढ़ बनाया है। निर्माणवाद अंतरराष्ट्रीय संबंधों में पहचान, विचारधारा और साझा ऐतिहासिक अनुभवों के महत्व पर बल देता है। दोनों ने यूरोपीय उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष किया। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरुद्ध भारत का समर्थन ऐतिहासिक महत्व रखता है। प्रवासी भारतीय समुदाय, ऐतिहासिक व्यापारिक संपर्क और सांस्कृतिक आदान–प्रदान ने पारस्परिक समझ को गहरा किया है। निर्माणवादी दृष्टिकोण से यह संबंध केवल रणनीतिक या आर्थिक नहीं, बल्कि साझा पहचान और मूल्यों पर आधारित है।

निर्भरता सिद्धांत यह तर्क देता है कि वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था में विकासशील देश विकसित देशों पर निर्भर रहते हैं। भारत और अफ्रीका दोनों ऐतिहासिक रूप से उपनिवेशवाद के कारण आर्थिक निर्भरता का अनुभव कर चुके हैं। दक्षिण दक्षिण सहयोग के माध्यम से वे पश्चिमी शक्तियों पर निर्भरता कम करने का प्रयास करते हैं। भारत का मॉडल कम लागत वाली तकनीक, स्थानीय क्षमता निर्माण और साझेदारी आधारित विकास पारंपरिक उत्तर–दक्षिण मॉडल से भिन्न है। दक्षिण–दक्षिण सहयोग एक वैकल्पिक विकास प्रतिमान है, जिसमें विकासशील देश परस्पर सहयोग के माध्यम से आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देते हैं। भारत–अफ्रीका साझेदारी इस मॉडल का एक प्रमुख उदाहरण है क्षमता निर्माण कार्यक्रम, कृषि, स्वास्थ्य और शिक्षा में तकनीकी सहयोग, डिजिटल और आईटी अवसंरचना विकास, जलवायु परिवर्तन और हरित ऊर्जा परियोजनाएँ, यह सहयोग समानता, पारस्परिक सम्मान और साझा विकास पर आधारित है। उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि भारत–अफ्रीका संबंधों को एकल सिद्धांत से नहीं समझा जा सकता। यथार्थवाद राष्ट्रीय

हित और रणनीतिक उद्देश्यों को स्पष्ट करता है। उदारवाद संस्थागत सहयोग और आर्थिक परस्पर निर्भरता को रेखांकित करता है। निर्माणवाद साझा पहचान और ऐतिहासिक अनुभवों की भूमिका को समझाता है। निर्भरता सिद्धांत और दक्षिण–दक्षिण सहयोग विकास के वैकल्पिक मॉडल को प्रस्तुत करते हैं। अतः भारत और अफ्रीका के कूटनीतिक एवं आर्थिक संबंध बहुआयामी हैं, जिनमें शक्ति–राजनीति, आर्थिक सहयोग, ऐतिहासिक जुड़ाव और विकासात्मक साझेदारी सभी शामिल हैं। भारत–अफ्रीका संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बहुस्तरीय, दीर्घकालिक और साझा अनुभवों से निर्मित है। यह संबंध आधुनिक राष्ट्र–राज्यों के उदय से बहुत पहले प्रारंभ हो चुका था और समय के साथ औपनिवेशिक प्रतिरोध, स्वतंत्रता संघर्ष, शीतयुद्ध की राजनीति तथा उत्तर औपनिवेशिक विश्व व्यवस्था के संदर्भ में विकसित होता गया।

भारत और अफ्रीका के बीच संपर्क प्राचीन काल से समुद्री व्यापार मार्गों के माध्यम से स्थापित थे। भारतीय व्यापारी पूर्वी अफ्रीका के तटवर्ती क्षेत्रों जैसे स्वाहिली तट मसाले, वस्त्र और हस्तशिल्प का व्यापार करते थे। बदले में सोना, हाथीदांत और अन्य वस्तुएँ भारत लाई जाती थीं। मध्यकाल में अरब व्यापारियों के साथ–साथ भारतीय समुदायों की उपस्थिति ने पूर्वी अफ्रीका में स्थायी सामाजिकदृआर्थिक संपर्क बनाए। ये संपर्क आगे चलकर प्रवासी भारतीय समुदायों (डायस्पोरा) के रूप में आधुनिक काल में भी दिखाई देते हैं। 19वीं और 20वीं शताब्दी में भारत और अधिकांश अफ्रीकी क्षेत्र यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों के अधीन थे। इस दौर में दोनों ने राजनीतिक दमन, आर्थिक शोषण और नस्लीय भेदभाव का अनुभव किया। दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय के अधिकारों के लिए महात्मा गांधी का संघर्ष भारत अफ्रीका ऐतिहासिक जुड़ाव का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। गांधीजी के सत्याग्रह और अहिंसा के प्रयोग ने न केवल भारत बल्कि अफ्रीकी स्वतंत्रता आंदोलनों को भी प्रेरित किया। औपनिवेशिक विरोध की इस साझी विरासत ने दोनों क्षेत्रों के बीच नैतिक एकजुटता और राजनीतिक सहानुभूति को मजबूत किया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एशिया और अफ्रीका में स्वतंत्रता आंदोलनों ने गति पकड़ी। इस काल में भारत ने अफ्रीकी देशों के आत्मनिर्णय के अधिकार का खुलकर समर्थन किया। 1950 के दशक में एशिया अफ्रीका एकजुटता का विचार उभरा, जिसने उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और नस्लवाद के विरुद्ध सामूहिक प्रतिरोध को स्वर दिया। इस प्रक्रिया में भारत ने वैचारिक और कूटनीतिक नेतृत्व की भूमिका निभाई।

शीतयुद्ध (1947–1991) के दौरान विश्व दो ध्रुवोंकृअमेरिका और सोवियत संघकृमें बँट गया। भारत और कई नवस्वतंत्र अफ्रीकी देशों ने किसी भी शक्ति गुट में शामिल न होकर स्वतंत्र विदेश नीति अपनाई। जवाहरलाल नेहरू की अगुवाई में भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन को वैचारिक आधार प्रदान किया। अफ्रीकी देशों के लिए यह मंच राजनीतिक स्वतंत्रता, संप्रभुता और विकासात्मक प्राथमिकताओं को सुरक्षित रखने का साधन बना। इस काल में भारत–अफ्रीका संबंध वैचारिक समानताओं, शांति सहअस्तित्व और अंतरराष्ट्रीय न्याय की साझा अवधारणा पर आधारित रहे। 1950 और 1960 के दशकों में जैसे–जैसे अफ्रीकी देशों को स्वतंत्रता मिली, भारत ने शीघ्रता से उनके साथ कूटनीतिक संबंध स्थापित किए। भारत ने कई अफ्रीकी देशों में दूतावास खोले। तकनीकी सहयोग, शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अफ्रीकी देशों के पक्ष का समर्थन किया। यह दौर भारतदृअफ्रीका संबंधों के संस्थागत स्वरूप की नींव रखने वाला था। 1991 के बाद वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण के साथ भारतदृअफ्रीका संबंधों को नया आयाम मिला। अब संबंध केवल वैचारिक या राजनीतिक न रहकर आर्थिक, व्यापारिक और रणनीतिक साझेदारी में परिवर्तित होने लगे। व्यापार और निवेश में वृद्धि, ऊर्जा और संसाधन सहयोग, बहुपक्षीय मंचों

पर रणनीतिक समन्वय। इस चरण में ऐतिहासिक मित्रता आधुनिक हितों और व्यावहारिक सहयोग से जुड़ गई। भारत–अफ्रीका संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि यह स्पष्ट करती है कि यह साझेदारी तात्कालिक लाभों पर नहीं, बल्कि दीर्घकालिक साझा अनुभवों, संघर्षों और मूल्यों पर आधारित है। औपनिवेशिक विरोध से लेकर गुटनिरपेक्षता और आधुनिक वैश्वीकरण तक हर चरण ने इस संबंध को नई दिशा दी है। यही ऐतिहासिक आधार आज के कूटनीतिक और आर्थिक सहयोग को नैतिक वैधता और स्थायित्व प्रदान करता है। भारत और अफ्रीका के कूटनीतिक संबंध ऐतिहासिक मित्रता, साझा मूल्यों और समकालीन वैश्विक हितों पर आधारित हैं। स्वतंत्रता के बाद से भारत ने अफ्रीका को अपनी विदेश नीति में एक नैतिक साझेदार, विकास सहयोगी और रणनीतिक मित्र के रूप में देखा है। समय के साथ ये संबंध द्विपक्षीय कूटनीति से आगे बढ़कर बहुपक्षीय एवं रणनीतिक साझेदारी में परिवर्तित हुए हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद भारत ने अफ्रीकी देशों के साथ औपचारिक राजनयिक संबंध स्थापित करने प्रारंभ किए। 1950–60 के दशक में अनेक अफ्रीकी देशों के स्वतंत्र होने पर भारत ने शीघ्रता से उनके साथ दूतावास खोले और राजनयिक मिशन स्थापित किए। आज भारत के अधिकांश अफ्रीकी देशों में उच्चायोग या दूतावास हैं, जो राजनीतिक संवाद, व्यापार, सांस्कृतिक संपर्क और विकास सहयोग को सुदृढ़ करते हैं। भारत की यह नीति "समानता और पारस्परिक सम्मान" पर आधारित रही है, जिसने अफ्रीकी देशों में भारत की सकारात्मक छवि को मजबूत किया। भारत और अफ्रीका के बीच उच्च स्तरीय राजनयिक यात्राएँ नियमित रूप से होती रही हैं। भारतीय राष्ट्रपतियों, प्रधानमंत्रियों और विदेश मंत्रियों ने अनेक अफ्रीकी देशों का दौरा किया है। अफ्रीकी राष्ट्राध्यक्षों और मंत्रियों ने भी भारत की आधिकारिक यात्राएँ की हैं। भारत और अफ्रीकी देश अंतरराष्ट्रीय मंचों पर एक–दूसरे के प्राकृतिक सहयोगी रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र में भारत को अफ्रीकी देशों का व्यापक समर्थन प्राप्त रहा है, विशेषकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार के प्रश्न पर। भारत और ।तिपबंद न्दपवद के बीच संस्थागत संवाद बढ़ा है। ठत्प्ैै और ळ20 जैसे मंचों पर वैश्विक दक्षिण (Global South) के मुद्दों पर साझा दृष्टिकोण देखने को मिलता है। यह सहयोग वैश्विक शासन व्यवस्था को अधिक समावेशी बनाने के प्रयासों को बल देता है। भारत–अफ्रीका कूटनीतिक संबंधों का एक महत्वपूर्ण आयाम रक्षा और सुरक्षा सहयोग है। भारत की रक्षा कूटनीति अफ्रीका में "साझेदार, न कि प्रभुत्वकारी शक्ति" की छवि प्रस्तुत करती है।

भारत ने अफ्रीका में अपनी कूटनीतिक उपस्थिति को सॉफ्ट पावर के माध्यम से भी मजबूत किया है। यह विकास कूटनीति भारत को अफ्रीका में एक भरोसेमंद और संवेदनशील साझेदार के रूप में स्थापित करती है। भारत और अफ्रीका के कूटनीतिक संबंध केवल औपचारिक राजनयिक संपर्कों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे साझा इतिहास, नैतिक समर्थन और व्यावहारिक सहयोग से निर्मित हैं। आज यह संबंध बहुपक्षीयता, विकास कूटनीति और रणनीतिक साझेदारी की दिशा में आगे बढ़ रहा है, जो वैश्विक दक्षिण की आवाज़ को सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

भारत–अफ्रीका आर्थिक संबंध 21वीं सदी में तीव्र गति से विकसित हुए हैं। यह साझेदारी केवल व्यापार तक सीमित न रहकर निवेश, ऊर्जा सुरक्षा, अवसंरचना विकास, कृषि, स्वास्थ्य, आईटी तथा क्षमता निर्माण जैसे व्यापक क्षेत्रों को समाहित करती है। "साझेदारी आधारित विकास" और "दक्षिण–दक्षिण सहयोग" की भावना ने इन आर्थिक संबंधों को नैतिक वैधता और दीर्घकालिक स्थिरता प्रदान की है। भारत और अफ्रीका के बीच द्विपक्षीय व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अफ्रीका भारत के लिए कच्चे तेल, प्राकृतिक गैस,

सोना, कोयला, तांबा और अन्य खनिजों का प्रमुख स्रोत है। भारत अफ्रीकी देशों को दवाइयाँ, मशीनरी, वाहन, वस्त्र, कृषि उपकरण, आईटी सेवाएँ और उपभोक्ता वस्तुएँ निर्यात करता है। यह व्यापारिक संरचना दोनों की पूरक अर्थव्यवस्थाओं को दर्शाती हैकृजहाँ अफ्रीका संसाधन–समृद्ध है और भारत विनिर्माण व सेवा–क्षेत्र में प्रतिस्पर्धी है।

अफ्रीका में भारतीय निवेश पिछले दो दशकों में तेजी से बढ़ा है। भारतीय सार्वजनिक एवं निजी कंपनियाँ निम्न क्षेत्रों में सक्रिय हैं। भारतीय निवेश का स्वरूप अपेक्षाकृत स्थानीय रोजगार सृजन, कौशल विकास और स्थानीय भागीदारी पर केंद्रित रहा है, जिससे भारत की छवि एक सहयोगी विकास साझेदार के रूप में उभरी है। भारत की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं के संदर्भ में अफ्रीका का महत्व अत्यधिक है। पश्चिम और पूर्वी अफ्रीका के देश भारत के लिए तेल और गैस के महत्वपूर्ण आपूर्तिकर्ता हैं। नवीकरणीय ऊर्जा विशेषकर सौर ऊर्जा में भी भारत और अफ्रीका के बीच सहयोग बढ़ रहा है। यह सहयोग भारत की दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा और अफ्रीका के सतत विकासकृदोनों को सुदृढ़ करता है।

भारत ने अफ्रीकी देशों को रियायती ऋण रेखाओं और विकास सहायता के माध्यम से आर्थिक सहयोग प्रदान किया है। यह सहायता मांग–आधारित और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप रही है, जो इसे पारंपरिक उत्तर दक्षिण सहायता मॉडल से अलग बनाती है। यह सहयोग वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में अधिक न्यायसंगत और समावेशी ढाँचे की माँग को सुदृढ़ करता है। इन चुनौतियों के समाधान के लिए दीर्घकालिक रणनीति और निजी सार्वजनिक साझेदारी आवश्यक है। भारत– अफ्रीका आर्थिक संबंध परस्पर लाभ, पूरकता और साझा विकास की अवधारणा पर आधारित हैं। व्यापार, निवेश और विकास सहयोग ने इस साझेदारी को मजबूत आधार दिया है। भविष्य में डिजिटल अर्थव्यवस्था, हरित ऊर्जा, कृषि नवाचार और औद्योगिक सहयोग के माध्यम से यह आर्थिक रिश्ता और अधिक गहन तथा रणनीतिक बन सकता है। भारत और अफ्रीका के बीच सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक संबंध उनके कूटनीतिक और आर्थिक संबंधों की आधारशिला हैं। ये संबंध केवल औपचारिक समझौतों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ऐतिहासिक संपर्क, प्रवासी समुदाय, शिक्षा, कला, भाषा, और साझा औपनिवेशिक अनुभवों से गहराई से जुड़े हुए हैं। "सॉफ्ट पावर" के माध्यम से भारत ने अफ्रीका में अपनी सकारात्मक और विश्वसनीय छवि स्थापित की है। पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका में भारतीय मूल के लोगों की उल्लेखनीय उपस्थिति हैकृविशेषकर केन्या, तंज़ानिया, दक्षिण अफ्रीका और मॉरीशस में। यह समुदाय व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य और सार्वजनिक जीवन में सक्रिय है और भारत–अफ्रीका संबंधों का सामाजिक सेतु बना हुआ है। दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय का ऐतिहासिक महत्व विशेष है, जहाँ महात्मा गांधी ने अपने सत्याग्रह आंदोलन की शुरुआत की। इस ऐतिहासिक विरासत ने दोनों समाजों के बीच गहरे सांस्कृतिक संबंधों को जन्म दिया। भारत की सांस्कृतिक कूटनीति अफ्रीका में अत्यंत प्रभावी रही है। भारतीय सिनेमा (विशेषकर बॉलीवुड) अफ्रीका के अनेक देशों में लोकप्रिय है। योग, आयुर्वेद और भारतीय शास्त्रीय संगीत को व्यापक स्वीकृति मिली है। "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" के अवसर पर अनेक अफ्रीकी देशों में सामूहिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं। भारत सरकार का Indian Council for Cultural Relations सांस्कृतिक कार्यक्रमों, छात्रवृत्तियों और कला–प्रदर्शनों के माध्यम से सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देता है। भारत अफ्रीकी छात्रों के लिए उच्च शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र बन गया है। इंजीनियरिंग, चिकित्सा, प्रबंधन और आईटी के क्षेत्र में हजारों अफ्रीकी छात्र भारतीय विश्वविद्यालयों में अध्ययन करते हैं। ITEC (Indian Technical and Economic Cooperation) कार्यक्रम के अंतर्गत तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। ICCR छात्रवृत्ति

योजनाएँ अफ्रीकी विद्यार्थियों को भारत में अध्ययन के अवसर देती हैं। यह शैक्षणिक सहयोग मानव संसाधन विकास और दीर्घकालिक पारस्परिक समझ को सुदृढ़ करता है। भारत ने अफ्रीका में ई–नेटवर्क परियोजनाओं, डिजिटल शिक्षा और टेलीमेडिसिन कार्यक्रमों के माध्यम से तकनीकी सहायता प्रदान की है। इन पहलों ने ज्ञान और तकनीक के आदानदृप्रदान को आसान बनाया है तथा विकास के नए आयाम खोले हैं।

भारत और अफ्रीका के साहित्य में औपनिवेशिक अनुभव, स्वतंत्रता संघर्ष और सामाजिक न्याय जैसे साझा विषय मिलते हैं। साहित्यिक सम्मेलनों, विश्वविद्यालयीय सहयोग और शोध परियोजनाओं के माध्यम से बौद्धिक संवाद को बढ़ावा मिला है। भारत अफ्रीका के सांस्कृतिक और शैक्षणिक संबंध कूटनीति के औपचारिक ढाँचे से आगे बढ़कर सामाजिक और मानवीय स्तर पर गहरी जड़ें रखते हैं। प्रवासी समुदाय, शिक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रम और डिजिटल सहयोग ने दोनों क्षेत्रों के बीच विश्वास और दीर्घकालिक साझेदारी को सुदृढ़ किया है। भविष्य में यह संबंध ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था, नवाचार और युवा सहभागिता के माध्यम से और अधिक मजबूत हो सकते हैं। भारत अफ्रीका सहयोग ऐतिहासिक निकटता, परस्पर हित और विकासात्मक साझेदारी पर आधारित होने के बावजूद अनेक संरचनात्मक, राजनीतिक और आर्थिक चुनौतियों से जूझ रहा है। ये चुनौतियाँ न केवल द्विपक्षीय परियोजनाओं की गति को प्रभावित करती हैं, बल्कि दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी की प्रभावशीलता पर भी असर डालती हैं। अफ्रीका में बाहरी शक्तियों की बढ़ती सक्रियता भारत के लिए एक प्रमुख चुनौती है। अवसंरचना, खनन, ऊर्जा और ऋण–वित्तपोषण के क्षेत्रों में तीव्र प्रतिस्पर्धा ने परियोजना चयन, वित्तीय शर्तों और समयबद्ध क्रियान्वयन को जटिल बना दिया है। इस संदर्भ में भारत को "गुणवत्तापूर्ण, पारदर्शी और टिकाऊ" साझेदारी का अपना तुलनात्मक लाभ बनाए रखते हुए प्रतिस्पर्धी बने रहना आवश्यक है। अनेक अफ्रीकी देशों में परिवहन, ऊर्जा, बंदरगाह और डिजिटल अवसंरचना की सीमाएँ परियोजना लागत बढ़ाती हैं और समय–सीमा को प्रभावित करती हैं। कुछ अफ्रीकी क्षेत्रों में राजनीतिक अस्थिरता, आंतरिक संघर्ष, आतंकवाद और समुद्री डकैती जैसी सुरक्षा चुनौतियाँ मौजूद हैं। ये कारक दीर्घकालिक परियोजनाओं और निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रभावित करते हैं। भारत अफ्रीका व्यापार अभी भी कुछ चुनिंदा वस्तुओं और क्षेत्रों तक सीमित है। अफ्रीका से भारत का आयात मुख्यतः कच्चे संसाधनों पर केंद्रित है। भारत से निर्यात कुछ उद्योगों तक सिमटा हुआ है। भारत अफ्रीका सहयोग की चुनौतियाँ वास्तविक हैं, किंतु वे अजेय नहीं हैं। प्रतिस्पर्धी दबावों के बीच भारत की साझेदारी–आधारित, मांग–उन्मुख और टिकाऊ विकास की पहचान एक महत्वपूर्ण पूंजी है।

1.1 शोध की आवश्यकता (Need of the Study)– वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत और अफ्रीका उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। 21वीं सदी को "अफ्रीका की सदी" कहा जा रहा है, जहाँ जनसंख्या, प्राकृतिक संसाधन, उभरते बाज़ार और रणनीतिक भौगोलिक स्थिति वैश्विक शक्तियों का ध्यान आकर्षित कर रही है। दूसरी ओर, भारत विश्व राजनीति और वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभर रहा है।

ऐसे में भारत–अफ्रीका संबंधों का अध्ययन आवश्यक हो जाता है क्योंकि–

- भारत की विदेश नीति में अफ्रीका की भूमिका निरंतर बढ़ रही है।
- वैश्विक दक्षिण के सशक्तिकरण में भारत–अफ्रीका साझेदारी केंद्रीय है।

- चीन, यूरोप और अमेरिका की बढ़ती उपस्थिति के बीच भारत की रणनीतिक स्थिति का विश्लेषण आवश्यक है।

अतः यह शोध भारत–अफ्रीका संबंधों की ऐतिहासिक, कूटनीतिक और आर्थिक समझ को समकालीन संदर्भ में विश्लेषित करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

1.2 समस्या का स्वरूप एवं व्याख्या– यद्यपि भारत और अफ्रीका के बीच ऐतिहासिक मित्रता और सहयोग रहा है, फिर भी यह संबंध कई व्यावहारिक और संरचनात्मक समस्याओं से ग्रस्त है। समस्या का स्वरूप निम्नलिखित बिंदुओं में स्पष्ट होता है–

- भारत–अफ्रीका व्यापार अभी भी सीमित वस्तुओं और क्षेत्रों तक केंद्रित है।
- निवेश और परियोजनाओं के क्रियान्वयन में अवसंरचनात्मक तथा प्रशासनिक बाधाएँ हैं।
- अन्य वैश्विक शक्तियों की तुलना में भारत की उपस्थिति और दृश्यता अपेक्षाकृत कम मानी जाती है।
- कूटनीतिक घोषणाओं और जमीनी स्तर पर परिणामों के बीच अंतर दिखाई देता है।
- इस प्रकार समस्या यह है कि ऐतिहासिक निकटता और राजनीतिक सद्भाव के बावजूद भारत–अफ्रीका सहयोग अपनी पूर्ण संभावनाओं को साकार नहीं कर पा रहा है।

1.3 अध्ययन का औचित्य (Rationale of the Study) – यह अध्ययन कई दृष्टियों से औचित्यपूर्ण है–

- यह शोध भारत की अफ्रीका नीति को केवल आदर्शवादी नहीं, बल्कि रणनीतिक और व्यावहारिक दृ ष्टि से समझने का प्रयास करता है।
- यह कूटनीति और अर्थव्यवस्था के अंतर्संबंध (Diplomacy–Economy Nexus) को स्पष्ट करता है।
- विकासशील देशों के बीच सहयोग (South–South Cooperation) के एक व्यवहारिक मॉडल को प्रस्तुत करता है।
- यह शोध नीति–निर्माताओं, शिक्षाविदों और शोधार्थियों के लिए उपयोगी सैद्धांतिक एवं अनुभवजन्य आधार प्रदान करता है।

अतः यह अध्ययन न केवल अकादमिक दृष्टि से, बल्कि नीति–निर्धारण के स्तर पर भी अत्यंत प्रासंगिक है।

1.4 अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)– इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- भारत–अफ्रीका संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना।
- भारत और अफ्रीकी देशों के बीच कूटनीतिक संबंधों के स्वरूप एवं विकास का अध्ययन करना।
- भारत–अफ्रीका आर्थिक सहयोग, व्यापार और निवेश के प्रमुख क्षेत्रों की समीक्षा करना।
- भारत–अफ्रीका सहयोग में विद्यमान चुनौतियों और बाधाओं की पहचान करना।
- भविष्य में भारत–अफ्रीका साझेदारी की संभावनाओं और दिशा का मूल्यांकन करना।

1.5 शोध–प्रश्न (Research Questions)– इस अध्ययन को निम्नलिखित शोध–प्रश्नों के माध्यम से निर्देशित किया गया है–

- भारत और अफ्रीका के बीच कूटनीतिक संबंधों का ऐतिहासिक विकास किस प्रकार हुआ है?
- समकालीन वैश्विक राजनीति में भारत–अफ्रीका आर्थिक संबंधों का क्या महत्व है?

- भारत की अफ्रीका नीति किस सीमा तक दक्षिण–दक्षिण सहयोग के सिद्धांत पर आधारित है?
- भारत–अफ्रीका सहयोग के समक्ष प्रमुख राजनीतिक, आर्थिक और संरचनात्मक चुनौतियाँ कौन–सी हैं?
- भविष्य में भारत–अफ्रीका संबंधों को अधिक प्रभावी और रणनीतिक बनाने के लिए कौन–से उपाय अपनाए जा सकते हैं?

1.6 अध्ययन की परिधि एवं सीमाएँ (Scope and Limitations of the Study)–

अध्ययन की परिधि– यह अध्ययन भारत और अफ्रीका के बीच कूटनीतिक तथा आर्थिक संबंधों के बहुआयामी स्वरूप को समझने का प्रयास करता है। अध्ययन की परिधि निम्नलिखित बिंदुओं तक सीमित है–

- भारत की अफ्रीका नीति का ऐतिहासिक और समकालीन विश्लेषण
- भारत–अफ्रीका कूटनीतिक संबंधों का द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय अध्ययन
- व्यापार, निवेश, ऊर्जा, विकास सहायता और तकनीकी सहयोग का विश्लेषण
- भारत–अफ्रीका फोरम समिट और बहुपक्षीय मंचों की भूमिका
- सहयोग में विद्यमान चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाएँ

अध्ययन की सीमाएँ–

- अफ्रीका एक विशाल और विविध महाद्वीप है; अतः सभी देशों का गहन अध्ययन संभव नहीं है।
- यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों (Secondary Dat) पर आधारित है।
- सांख्यिकीय आँकड़ों की उपलब्धता और विश्वसनीयता में असमानता पाई जाती है।
- सुरक्षा और रक्षा सहयोग का विश्लेषण सीमित दायरे में किया गया है।

1.7 परिकल्पना (Hypotheses)– इस शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं–

- भारत और अफ्रीका के बीच कूटनीतिक संबंध ऐतिहासिक साझे अनुभवों और दक्षिणदृदक्षिण सहयोग की अवधारणा पर आधारित हैं।
- आर्थिक सहयोग भारत–अफ्रीका संबंधों का सबसे गतिशील और निर्णायक पक्ष बनकर उभरा है।
- वैश्विक प्रतिस्पर्धा और संरचनात्मक चुनौतियों के बावजूद भारत–अफ्रीका साझेदारी में दीर्घकालिक विकास की पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान हैं।
- भारत की विकासात्मक और साझेदारी–आधारित नीति अफ्रीका में अन्य वैश्विक शक्तियों से भिन्न है।

1.8 शोध प्राविधि (Research Methodology)

यह अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive) और विश्लेषणात्मक (Analytical) शोध पद्धति पर आधारित है।

डेटा के स्रोत

द्वितीयक स्रोत–

- पुस्तकें

- शोध पत्र एवं जर्नल
- सरकारी रिपोर्टें
- अंतरराष्ट्रीय संगठनों के दस्तावेज
- समाचार पत्र एवं ऑनलाइन डेटाबेस

विश्लेषण की विधि

- तुलनात्मक विश्लेषण
- ऐतिहासिक एवं समकालीन विश्लेषण
- सैद्धांतिक व्याख्या

1.9 साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

भारत–अफ्रीका संबंधों पर उपलब्ध साहित्य को तीन प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है–

ऐतिहासिक एवं वैचारिक अध्ययन– उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन, गुटनिरपेक्षता और नैतिक कूटनीति पर केंद्रित अध्ययन।

कूटनीतिक एवं रणनीतिक अध्ययन– भारत की अफ्रीका नीति, बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग और वैश्विक दक्षिण की राजनीति।

आर्थिक एवं विकासात्मक अध्ययन– व्यापार, निवेश, ऊर्जा सुरक्षा और विकास सहायता पर आधारित विश्लेषण।

साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश अध्ययन या तो ऐतिहासिक या आर्थिक पक्ष पर केंद्रित हैं, जबकि समग्र और समन्वित विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित है। यह शोध इसी शून्य को भरने का प्रयास करता है।

1.10 डेटा विश्लेषण – उपलब्ध आँकड़ों और दस्तावेजों के विश्लेषण से निम्न तथ्य उभरकर सामने आते हैं–

- भारत–अफ्रीका व्यापार में निरंतर वृद्धि हुई है, किंतु यह अभी भी कुछ क्षेत्रों तक सीमित है।
- भारतीय निवेश मुख्यतः ऊर्जा, फार्मास्यूटिकल्स, आईटी और कृषि क्षेत्रों में केंद्रित है।
- विकास सहायता और ऋण रेखाओं ने अफ्रीकी देशों की अवसंरचना और मानव संसाधन विकास में योगदान दिया है।
- डेटा विश्लेषण यह दर्शाता है कि सहयोग की संभावनाएँ व्यापक हैं, परंतु क्रियान्वयन में सुधार की आवश्यकता है।

1.11 चर्चा – चर्चा के स्तर पर यह स्पष्ट होता है कि भारत–अफ्रीका संबंध केवल रणनीतिक हितों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे ऐतिहासिक विश्वास और साझेदारी पर आधारित हैं। हालाँकि, वैश्विक प्रतिस्पर्धा, राजनीतिक अस्थिरता और आर्थिक सीमाएँ सहयोग को प्रभावित करती हैं। भारत की "सॉफ्ट पावर", विकास कूटनीति और साझेदारी–आधारित दृष्टिकोण इसे अफ्रीका में एक विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

1.12 परिणाम – इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं–

- भारत–अफ्रीका संबंध ऐतिहासिक, कूटनीतिक और आर्थिक स्तर पर सुदृढ़ आधार रखते हैं।
- आर्थिक सहयोग इस साझेदारी का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ बनकर उभरा है।
- भारत की अफ्रीका नीति सहयोगात्मक और विकासोन्मुख है, न कि प्रभुत्ववादी।
- व्यापारिक विविधीकरण और संस्थागत क्षमता में सुधार की आवश्यकता है।
- भविष्य में डिजिटल, हरित ऊर्जा और शिक्षा सहयोग भारत–अफ्रीका संबंधों को नई दिशा दे सकते हैं।

नीतिगत सुझाव (Policy Recommendations)–

1. भारत को एक दीर्घकालिक, समन्वित और क्षेत्र–विशिष्ट अफ्रीका नीति विकसित करनी चाहिए, जिसमें कूटनीति, व्यापार, सुरक्षा, शिक्षा और संस्कृति को एकीकृत दृष्टिकोण से जोड़ा जाए।

2. भारत–अफ्रीका व्यापार को कच्चे संसाधनों तक सीमित रखने के बजाय विनिर्माण, कृषि–प्रसंस्करण और MSME आधारित सहयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

3. अफ्रीकी क्षेत्रीय आर्थिक समुदायों के साथ मिलकर भारत को Regional Value Chains विकसित करनी चाहिए, जिससे स्थानीय औद्योगीकरण और रोजगार सृजन संभव हो।

4. भारतीय निजी क्षेत्र, स्टार्टअप्स और अफ्रीकी उद्यमों के बीच संयुक्त उपक्रम (Joint Ventures) और तकनीकी साझेदारी के लिए संस्थागत सहायता दी जाए।

5. भारतीय निवेशकों के लिए अफ्रीका में निवेश सुरक्षा समझौतों, बीमा तंत्र और वित्तीय जोखिम प्रबंधन ढाँचे को मजबूत किया जाना चाहिए।

6. परिवहन, बंदरगाह, ऊर्जा और डिजिटल अवसंरचना में भारत– अफ्रीका सहयोग को प्राथमिकता दी जाए, जिससे व्यापार लागत कम हो और परियोजना क्रियान्वयन तेज़ हो।

7. तकनीकी प्रशिक्षण, उच्च शिक्षा, कौशल विकास और डिजिटल साक्षरता के क्षेत्र में भारत को अफ्रीका के लिए दीर्घकालिक क्षमता निर्माण साझेदार के रूप में कार्य करना चाहिए।

8. सस्ती दवाओं, वैक्सीन उत्पादन, स्वास्थ्य अवसंरचना और चिकित्सा प्रशिक्षण में सहयोग को भारत–अफ्रीका साझेदारी का प्रमुख स्तंभ बनाया जाए।

9. सौर, पवन और स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं में संयुक्त निवेश तथा जलवायु परिवर्तन अनुकूलन (Climate Adaptation) रणनीतियों पर सहयोग बढ़ाया जाए।

10. हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा, मत्स्य संसाधन, समुद्री व्यापार और ब्लू इकॉनमी के क्षेत्र में रणनीतिक सहयोग को सुदृढ़ किया जाए।

11. शिक्षा, संस्कृति, योग, आयुर्वेद, मीडिया और प्रवासी समुदाय के माध्यम से People-to-People Contact को और मजबूत किया जाए, जिससे दीर्घकालिक विश्वास निर्मित हो।

निष्कर्ष– भारत और अफ्रीका के बीच कूटनीतिक तथा आर्थिक संबंध ऐतिहासिक साझा अनुभवों, औपनिवेशिक विरोध, गुटनिरपेक्ष आंदोलन और दक्षिण'–दक्षिण सहयोग की अवधारणा पर आधारित रहे हैं। यह संबंध प्रारंभ में नैतिक समर्थन और राजनीतिक एकजुटता तक सीमित था, किंतु समय के साथ यह बहुआयामी,

व्यावहारिक और रणनीतिक साझेदारी में परिवर्तित हो गया है। आज भारतदृअफ्रीका संबंध केवल द्विपक्षीय हितों तक सीमित न रहकर वैश्विक दक्षिण की सामूहिक आकांक्षाओं और अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में संतुलन की आवश्यकता को भी अभिव्यक्त करते हैं। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत ने अफ्रीका के साथ अपनी नीति में सहयोगात्मक और विकासोन्मुख दृष्टिकोण अपनाया है, जिसमें पारस्परिक सम्मान, समानता और साझा लाभ को प्राथमिकता दी गई है। व्यापार, निवेश, ऊर्जा सुरक्षा, विकास सहायता, शिक्षा और क्षमता निर्माण जैसे क्षेत्रों में भारत–अफ्रीका सहयोग ने उल्लेखनीय प्रगति की है। भारत की विकास कूटनीति, सॉफ्ट पावर और मानव संसाधन विकास पहलें अफ्रीकी देशों में उसे एक विश्वसनीय और संवेदनशील साझेदार के रूप में स्थापित करती हैं।

हालाँकि, यह भी सत्य है कि भारत–अफ्रीका संबंध अनेक चुनौतियों से मुक्त नहीं हैं। वैश्विक प्रतिस्पर्धा, अवसंरचनात्मक सीमाएँ, राजनीतिक अस्थिरता, व्यापारिक विविधीकरण की कमी और परियोजनाओं के क्रियान्वयन में विलंब जैसे कारक इस साझेदारी की गति को प्रभावित करते हैं। इसके बावजूद, ऐतिहासिक विश्वास, साझा हित और दीर्घकालिक रणनीतिक संभावनाएँ इन चुनौतियों पर विजय पाने की क्षमता प्रदान करती हैं।

अंततः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत–अफ्रीका संबंध भविष्य में और अधिक सशक्त, व्यापक और रणनीतिक रूप ग्रहण कर सकते हैं, बशर्ते कि नीति–निरंतरता, संस्थागत समन्वय और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप सहयोग को प्राथमिकता दी जाए। यह साझेदारी न केवल भारत और अफ्रीका के विकास में सहायक होगी, बल्कि एक अधिक न्यायसंगत, समावेशी और बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

भविष्य में भारत–अफ्रीका संबंधों पर अनुसंधान न केवल अकादमिक ज्ञान को समृद्ध करेगा, बल्कि नीति–निर्माण, कूटनीतिक व्यवहार और वैश्विक दक्षिण की सामूहिक रणनीति को भी दिशा प्रदान करेगा।

संदर्भ सूची (References)

1. Alden, C. (2007). *China in Africa*. Zed Books.
2. Alden, C., & Large, D. (2019). New actors and the evolving nature of South–South cooperation: India and Africa. *Third World Quarterly, 40*(5), 873–889.
3. African Development Bank. (2022). *African Economic Outlook 2022*. AfDB Publications.
4. Chaturvedi, S. (2016). *The logic of sharing: Indian approach to South–South cooperation*. Cambridge University Press.
5. Cheru, F., & Obi, C. (Eds.). (2010). *The rise of China and India in Africa: Challenges, opportunities and critical interventions*. Zed Books.
6. Government of India, Ministry of External Affairs. (2023). *India–Africa relations: Historical overview and current engagement*. MEA Publications.
7. Hofmeyr, J. (2018). India–Africa trade relations: Emerging patterns and prospects. *Journal of African Trade, 5*(1–2), 1–15.
8. Kragelund, P. (2015). India's Africa engagement: New actors, new strategies. *International Affairs, 91*(2), 343–359.
9. Large, D. (2008). Beyond 'dragon in the bush': The study of China–Africa relations. *African Affairs, 107*(426), 45–61.

10. Mawdsley, E. (2012). *From recipients to donors: Emerging powers and the changing development landscape*. Zed Books.
11. Mohan, C. R. (2013). *Samudra Manthan: Sino-Indian rivalry in the Indo-Pacific*. Carnegie Endowment for International Peace.
12. Naidu, S. (2010). India's growing African strategy. *African Security Review, 19*(3), 15–28.
13. Narlikar, A. (2010). *New powers: How to become one and how to manage them*. Hurst Publishers.
14. Olivier, G. (2017). India–Africa relations in the 21st century. *South African Journal of International Affairs, 24*(2), 213–230.
15. Organisation for Economic Co-operation and Development (OECD). (2021). *Global outlook on financing for sustainable development*. OECD Publishing.
16. Pradhan, S. (2014). India's development partnership with Africa: Framework and implementation. *RIS Discussion Papers*.
17. Sharma, R. (2019). India–Africa economic cooperation: Trends and challenges. *Economic and Political Weekly, 54*(12), 45–52.
18. Singh, S. (2018). India's foreign policy towards Africa: Continuity and change. *India Quarterly, 74*(4), 403–420.
19. United Nations Conference on Trade and Development (UNCTAD). (2022). *World Investment Report 2022*. United Nations.
20. World Bank. (2023). *World Development Indicators*. World Bank Publications.